उत्तर आधुनिकवाद (Post Modernism).

उत्तर आधुनिकतावाद 20वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में विकसित होना शुरु हुआ है, इसने आधुनिकतावाद का मुखर स्वर में विरोध किया है। परन्तु इस विचारधारा को सन् 1985 के बाद ही भूगोलवेत्ताओं ने स्वीकार करना प्रारम्भ किया। इस विचारधारा को आगे बढ़ाने में Neitzche, Hussel, Heidegger आदि विद्वानों ने काफी प्रयास किया है। उत्तर आधुनिकतावाद का विकास आधुनिकतावाद के प्रतिक्रिया फलस्वरुप हुआ। आधुनिकतावाद तर्क, कार्य कारण, क्रमबद्धता (systematic order) एवं समरुपता पर बल देता है। आधुनिकतावाद के अनुसार अगर समान परिस्थिति मौजूद है तो सभी जगह घटना में समानता होगी। यह शुद्ध परीक्षण के आधार पर सम्पूर्ण की व्याख्या करता है जबकि उत्तर आधुनिकतावाद का कहना है कि संसार में discontinuity और disjunction है अतः सामान्यीकरण के आधार पर निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है। यह आवश्यक नहीं है कि समान परिस्थिति में विश्व में सभी जगह समान घटना के बाद समान प्रतिक्रिया व्यक्त की जाय।

— Post-Modernism – a response to modernism – A world asserting on the power of reason and progress of rationality – a homogenous force.

— Post modernism – असातत्यता (discontinuity) और असम्बद्धता (disjunction) पर अधिक जोर देता है जो आधुनिक जीवन की विशेषता है (Meaning & Metaphor लक्षणा; heterogenity भिन्नता : particularity, unioneness – a regional diversity प्रादेशिक विभिन्नता).

उत्तर आधुनिकतावाद असातत्यता और असम्बद्धता पर अधिक जोर देता है। वास्तव में प्रकृति में और जीवन में असातत्यता और असम्बद्धता है। प्रकृति और मनुष्य के जीवन में इसका उदाहरण भरा पड़ा है।

— Post-modernism, – Against modernism:

(A) Naturalism:– Nature are relevant to the study of humans (मनुष्य के अध्ययन के लिए प्रकृति प्रासंगिक है):—

उत्तर आधुनिकतावाद प्रकृति और मानव में गहरा सम्बन्ध देखता है। इसके अनुसार मानव का अध्ययन प्रकृति के बिना संभव नहीं है। मानव प्रकृति को प्रभावित करता है और प्रकृति मानव को। अतः अगर हम मानव का अध्ययन करते हैं तो प्रकृति का अध्ययन आवश्यक है। प्रकृति से अलग मानव का अस्तित्व नहीं है।

(B) Totalization – conception of science = systematic order = spatiality:–

आधुनिकतावाद किसी चीज का अध्ययन सूक्ष्म और क्रमबद्ध रूप में करता है जबकि PM का विचार है कि सूक्ष्म और क्रमबद्ध अध्ययन संभव नहीं है क्योंकि जीवन में क्रमबद्धता नहीं है। मनुष्य का जीवन अक्रमबद्ध है, प्रकृति में भी असम्बद्धता है। मनुष्य का जीवन अक्रमबद्ध है, यही क्रमबद्धता है।